शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2013

भारतीय साहित्य में सांस्कृतिक समन्वय

डा. दिवाकर गरवा
फैकेल्टी एसोसिएट
हिन्दी विभाग
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा
गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश

शोध संक्षेप

सामाजिक संस्कृति के सहज संचरण का प्रमुख साधन शिक्षा है। शिक्षा का धर्म जीवन-मूल्यों से सम्बद्ध है। शिक्षा के द्वारा ही शाश्वत सत्य को पहचाना जा सकता है। अतः वर्तमान सन्दर्भ में शिक्षा की व्यवस्था में सांस्कृतिक चेतना का समावेश आवश्यक है। बदलते हुए जीवन मूल्यों ने हमारी संस्कृति को प्रभावित अवश्य किया है, किन्तु हमारी लोक-संस्कृति आज भी जीवित है। लोक-संस्कृति का सीधा सम्बन्ध त्याग, धर्म, तप, नीति और आचरण से है। हमारा लोक-साहित्य इन सभी तत्वों से युक्त है और इसी कारण आधुनिकता के प्रभाव से मुक्त है। प्रस्तुत शोध पत्र में संस्कृति और साहित्य के अन्तर्सम्बन्धों की पड़ताल की गयी है।

प्रस्तावना

अध्ययन के क्षेत्र में लोक-साहित्य का ज्ञान भी अत्यन्त आवश्यक है। जब जीवन-मूल्य जड़ हो जाते हैं तो लोक-संस्कृति और लोक-साहित्य ही उनकी पुनर्स्थापना में सहायक होते हैं। लोक-कलाओं ने निरन्तर भारतीय संस्कृति की रक्षा की है। नगरीय संस्कृति पर मनोरंजन के आधुनिक साधनों का जितना गहरा प्रभाव पड़ता है उतना लोक-संस्कृति पर नहीं। विविधता में एकता हमारी लोक-संस्कृति की प्रमुख विशेषता हैं। एकता का भाव लोक-संस्कृति का मुख्य आधार है।

'संस्कृति' का शाब्दिक अर्थ है-आचरणगत परम्परा, सभ्यता, शुद्धि, सुधार, परिष्कार, पवित्रीकरण आदि। आचरण और व्यवहार की शुद्धता ही किसी समाज की संस्कृति है। 'सम्' उपसर्ग के साथ संस्कृत की(ड.) कृ (अ) धातु के मेल से 'संस्कृति' शब्द बना है जिसका अर्थ है साफ करना अथवा परिष्कृत करना। **1** अंग्रेजी भाषा में संस्कृति के लिए 'कल्चर' शब्द प्रचलित है जो लोक व्यवहार में प्रचलित हो रहा है। दोनों का अर्थ और ध्वनि समान है। सामान्य अर्थ में कहा जा सकता है कि जो व्यवहार सामाजिक परम्परा से प्राप्त होता है वह हमारी संस्कृति का मूल आधार है। सामाजिक प्रथा संस्कृति का पोषण करती है। कुछ विद्वानों ने संस्कृति को नर विज्ञान कहा है। यदि समग्र विवेचन किया जाये तो 'सभ्यता' को संस्कृति का अंग ही माना जा सकता है। भारतीय संस्कृति जीवन मूल्यों, गुण, धर्म, आचरण की शुद्धता, लोक व्यवहार, भाषा-साहित्य, दर्शन, कला, सभ्यता, समाज, संस्कार, रीति रिवाज, लोकोत्सव आदि से सम्बद्ध है तथा यहीं उसके प्रमुख तत्त्व है। ज्ञान और विज्ञान का

सम्बन्ध भी संस्कृति से है। हमारे समाज की रचनात्मक शक्ति आदर्श और यथार्थ पर टिकी है, इसीलिए यहाँ की संस्कृति प्राणवान है। सिंधु और गंगा नदी, फरात और दजला तथा नील नदी की घाटियों में अनेक सभ्यताओं का उदय हुआ। आभीर, गुर्जर और जाट आदि जातियों ने यहाँ आकर अपना आवास बनाया। उर्वरा भूमि में गाँव बसाये और निर्माण कार्य किया। भारतीय संस्कृति इन अन्तहीन इकाइयों के समन्वय के कारण ही आज जीवित है। यहाँ की संस्कृति जितनी प्राचीन है उतनी ही गतिशील भी है। यहाँ का सांस्कृतिक इतिहास हमें निरन्तर आगे बढने की प्रेरणा देता है। क्योंकि हमने सभी उपयोगी मान्यताओं को आत्मसात किया है। विकास और विनाश के बीच भी भारतीय संस्कृति जीवित रही है क्योंकि इसमें प्राणदायिनी शक्ति है। कुछ लोग भारतीय संस्कृति का अर्थ मात्र हिन्दुत्व एवं हिन्दू राष्ट्र से जोड़ते है किन्तु यह संकीर्ण दृष्टिकोण है। 'हिन्दू' शब्द के प्रयोग का प्रारम्भ तो 549 तथा 552 ई. पू. के बीच हुआ था जबकि भारतीय संस्कृति इससे भी प्राचीन है। भारतीय संस्कृति और साहित्य संस्कृति के अध्ययन में ऐतिहासिक दृष्टिकोण अपनाना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि इतिहास के माध्यम से ही अतीत की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझा जा सकता है। हमें इस भ्रम को छोड़ना पड़ेगा कि भारतीय संस्कृति का विकास मात्र भारतीय समाज के सौजन्य से ही संभव हुआ। यूनानियों, शकों, अरबों आदि से हमने बहुत कुछ सीखा है। गुणन की पद्धति यूनानियों से सीखी तो शकों ने शक संवत दिया। अरबों ने हमें भाषा-साहित्य, संगीत और कला का ज्ञान कराया। सामान्य बोलचाल की शब्दावली के अनेक शब्द फारसी और तुर्की भाषा से लिए है। रोटी, कागज, मोहल्ला, जिला, पता, पायजामा, गुलाब, नारंगी, जेब, दर्जी कुर्ता, दुकान आदि अनेक शब्द हैं जिनको हमने अपना मान लिया है। संगीत की अनेक राग-रागनियों पर इस्लामी संगीत का प्रभाव है। भारतीय संस्कृति ने विदेशी जातियों की प्रचलित परम्पराओं को दैनिक व्यवहार में आत्मसात कर लिया है तथा यह क्रम आज भी जारी है। हमारी-भाषा और साहित्य को विदेशों से आने वाली जातियों ने बहुत प्रभावित किया है। प्राकृत और अपभ्रंश को गुर्जरों और आभीरों ने बहुत प्रभावित किया है। बौद्ध और जैन धर्म की अहिंसा साधना और आचरण सम्बन्धी परमपराओं को भारतीय समाज ने हृदय से स्वीकार किया है। सूफी सन्तों ने प्रेम को आधार मानकर भारतीय समाज और साहित्य को नई प्रेरणा प्रदान की। इस्लाम धर्म ने एक हजार वर्ष तक हिन्दु समाज को हर क्षेत्र में प्रभावित किया। ज्ञान-विज्ञान, साहित्य कला, संगीत, चिकित्सा, विधि, कृषि, शिक्षा आदि के विकास में मुस्लिम समाज का बराबर सहयोग रहा है। अमीर खुसरो खड़ी बोली की कविता के जन्म दाता थे तथा उन्होने भारतीय संगीत को समृद्ध करने में महत्तवपूर्ण योगदान दिया था। मुस्लिम संगीतकारों ने अनेक वाद्ययन्त्रों का आविष्कार किया था। तानसेन अपने युग का श्रेष्ठ मुस्लिम संगीतकार था। वास्तुकला और चित्रकला पर भी इस्लाम धर्म की संस्कृति और कला का प्रभाव पड़ा। सार रूप में कहा जा सकता है कि स्थापत्य कला से लेकर सूक्ष्म कलाओं पर विदेशों से आने वाली जातियों और कबीलों का विशेष योगदान

रहा है। राजस्थान की ग्रामीण संस्कृति को मध्य एशिया से आने वाली जातियों ने सर्वाधिक प्रभावित किया है जिनमें जाट, अहीर गुर्जर और मुस्लिम प्रमुख है।

हिन्दी साहित्य के मध्यकाल को भक्ति मार्ग ने विशेष प्रभावित किया। भक्ति काल अपने विशुद्ध रूप में धर्म भावना का भावात्मक या रसात्मक रूप है जिससे भारतीय समाज और संस्कृति प्रतिष्ठा के शिखर तक पहुंची। 'भक्ति' शब्द का शाब्दिक अर्थ है-भगवान की सेवा करना। ज्ञान और कर्म से रहित हो किसी प्रकार के फल की इच्छा किये बिना, निरन्तर भगवान का प्रेमपूर्वक ध्यान करना ही भक्ति है। भक्ति-भावना के कारण देवता विषयक भावनाएं व्यापक एवं परिष्कृत होती चली गई। इस भावना को उस युग के भक्त-कवियों ने ग्रहण कर भक्ति- विषयक काव्य लिखा। कुछ विद्वान भक्ति का विकास दक्षिण भारत के आलवार भक्तों के सौजन्य से मानते हैं। 'भक्ति द्राविड़ ऊपजी' लाए रामानन्द।' यह लहर दक्षिण से उत्तर तक फैल गई और उसके दो रूप प्रचलित हो गए सगुण और निर्गुण भक्ति। भक्ति के साधन पक्ष-नवधाभक्ति। सगुण- राम भक्ति शाखा, कृष्ण भक्ति शाखा निर्गुण- ज्ञान मार्ग, प्रेम मार्ग (कर्म ज्ञान और भक्ति का समन्वय)

भक्ति के विकास में अन्य विचार धाराओं का प्रभाव सिद्धों का प्रभाव नाथों का प्रभाव सूफी प्रभाव अद्वैतवाद का प्रभाव (सन्त परम्परा) भक्ति का स्थूल रूप आरम्भ से लेकर लगभग एक-सा ही रहा है। साध्य वही है किन्तु साधनों के भेद हो गए। भक्ति आंदोलन बिजली की चमक के समान सर्वत्र फैल गया। उसने सभी धार्मिक मतों के अन्धकार को दूर कर दिया। गोस्वामी तुलसीदास ने रामकथा की साहित्यिक और धार्मिक दोनों परम्पराओं का समन्वय कर एक ऐसा अपूर्व काव्य प्रस्तुत किया जिसमें धर्म और काव्य की युगल धारा प्रभावित हुई है। राम और सीता, भरत और लक्ष्मण के चरित्र को आधार बनाकर भारतीय समाज को एक सूत्र में बाँधने का सफल प्रयास किया। रामचरित मानस एक ऐसा महाकाव्य है जो धर्म, दर्शन, ज्ञान, भक्ति, भाषा-साहित्य आदि सभी क्षेत्रों में अद्वितीय है। उन्होंने बिखरे हुए समाज को समन्वय के माध्यम से एक सूत्र मे जोड़ा। तुलसीदास जी ने जो राम कथा लिखी है वह वाल्मीकि और भवभूति के राम से नितान्त भिन्न है। तुलसी दास जी ने काव्य के सभी रूपों में काव्य साधना की तथा अवधी और ब्रजभाषा का प्रयोग किया। अपभ्रंश और हिन्दी के सभी-छंदो का प्रयोग किया। उन्हांेने ज्ञान और भक्ति मे समन्वय किया। उन्हांेने लोक-मंगल की भावना को आधार वनाकर काव्य साधना की। तुलसी का युग सांस्कृतिक संघर्ष का युग है। यह संघर्ष भीतरी और बाहरी दोनों प्रकार का था। भारतीय संस्कृति पहली बार विदेशी संस्कृतियों से टकराई थी किन्तु तुलसीदास ने राम की सगुण भक्ति के सहारे सामाजिक संघर्ष को शान्त किया। सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक स्तरों पर तुलसी ने अपने युग को आत्मबल दिया। वे भीतर और बाहर एक रस हैं। वस्तुतः तुलसी के राम का चरित्र उनका शील और उनकी करूणा भारतीय साहित्य और समाज में अद्वितीय है। उनकी लोक साधना की आधार भूमि समन्वय है। तुलसीदास जी के अतिरिक्त राम भक्ति शाखा में

अग्रदास, नाभादास, केशवदास, प्राणचन्द चैहान, ह्रदयराम, लालराम, सेनापति आदि प्रमुख है। आधुनिक काल में इसी क्रम में नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' महाकाव्य की रचना की है। सौन्दर्य और प्रेम को परखने की सूरदास में अदभुत क्षमता थी। कृष्ण भक्ति की सगुण भक्ति परम्परा में सूरदास का स्थान सबसे ऊँचा है। उनके समान प्रेम का कोई चित्रकार कवि नहीं हुआ। श्रीकृष्ण के प्रति उनकी परम-प्रेम-रूपा भक्ति थी। उन्होंने श्रृंगार और वात्सल्य रस में काव्य रचना की। ब्रज भाषा में मानव सौन्दर्य को विविध रुपों में चित्रित किया। प्रकृति के सौन्दर्य को उन्होंने अलग करके नहीं देखा। अष्टछाप के कवियों में उनका स्थान महत्वपूर्ण है। उन्होंने सूरसागर, सूरसरावली और साहित्य लहरी की रचना की। **2**

कृष्ण भक्ति काव्य - परम्परा में परमानन्ददास, कृष्णदास, गोविन्द स्वामी, चतुर्भुजदास और नन्ददास आदि प्रमुख कवि हैं।**3** आधुनिक काल में अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का स्थान प्रमुख कवि हैं। मीराबाई ने राजस्थानी भाषा में काव्य साधना की।

हिन्दी का भक्तिकाल निर्गुणोंपासक कवियों से प्रारम्भ होता है। मुसलमानों के यहाँ आने पर हिन्दु-मुसलमानांे की संस्कृति के मिश्रण से ईश्वर के उस रुप का प्रचार हुआ जो निराकार, सर्वव्यापक और अखंड ज्योति स्वरुप है। ईश्वर के प्रति भक्ति भाव ही संत- काव्य के रुप में उदित हुआ। संत काव्य परम्परा में कबीर, रैदास, नानक, दादु, जगजीवन दास, हरिदास, दरिया साहब, भीखा साहब, राम चरण, सहजानन्द आदि प्रमुख हैं। इन सभी संत कवियों ने आचरण की शुद्वता पर बल देते हुए माया, पाखंडवाद, छुआछूत, मूर्ति पूजा आदि का विरोध किया। इन संत कवियों की भाषा को खिचड़ी भाषा कहते हैं।**4** ज्ञान मार्गी काव्य परम्परा में संत कबीर का स्थान प्रमुख है जिनकी वाणियाँ आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने अपनी वाणियों के माध्यम से समाज को सर्वाधिक प्रभावित किया, क्योंकि वे सत्य के उपासक एवं स्पष्ट वक्ता थे। संतों की भक्ति मूलतः प्रेममूला थी जिसमें ज्ञान का योग था। सहजोबाई एवं दयाबाई राजस्थान की प्रमुख संत कवियित्री हैं।

इस शाखा के कवि प्रेम के बल पर ईश्वर को प्राप्त करना चाहते थे। इनके काव्य को प्रेमाख्यानक काव्य कहते है। राजस्थानी भाषा में भी प्रेमाख्यानक काव्य लिखा है। इस परम्परा के कवियों ने प्रेम का संदेश देकर समाज में समरसता की भावना पैदा की। जायसी ने अवधी भाषा में पद्मावत की रचना की। कुतुबन कृत मधुमालती भी प्रसिद्व रचना है। मृगावती, चन्द्रावती, इन्द्रावती आदि प्रमुख प्रेमाख्यानक काव्य कृतियाँ है। आध्यात्मिक प्रेम पर आधारित इन प्रेम परक कृतियों ने भारतीय समाज में सामाजिक समरसता का वातावरण बनाया और आध्यात्मक प्रेम के माध्यम से भक्ति का आधार सुदृढ किया। भक्तिकाल की सामाजिक चेतना को सगुण और निर्गुण परम्परा के कवियों ने अपने-अपने ढंग से सुदृढ किया।

लोक साहित्य (लोक गाथा, लोक नाटक और लोक संगीत)

हमारे देश का लोक साहित्य जीवनमयी पवित्र नदी के समान हैं जो सहजता के कारण अपना

महत्वपूर्ण स्थान रखता है। लोक साहित्य में जीवन का भोगा हुआ यथार्थ होता है। साहित्य के दो रुप प्रारम्भ से ही प्रचलित हैं, शिष्ट साहित्य और लोक साहित्य। शिष्ट साहित्य मूलतः शास्त्रीय एवं व्याकरण के नियमों से बंधा हुआ होता है, जबकि लोक साहित्य नियमों से पूर्णतः मुक्त होता है। जीवन का पूर्ण सत्य लोक साहित्य में ही मिलता है क्योंकि वह जन-जन की वाणी में सुरक्षित रहता है। अधिकांश लोक साहित्य श्रुतिनिष्ट परम्परा में ही प्रचलित रहता है। यह साहित्य लोकगाथा, लोकनाटकों एवं लोकगीतों के माध्यम से जनमानस से जुड़ा रहता है। अधिकांश लोक साहित्य श्रुतिनिष्ठ परम्परा में ही प्रचलित रहता है। **5** यह साहित्य लोकगाथा, लोकनाटकों एवं लोकगीतों के माध्यम से जनमानस कहा जाता है। यहाँ की लोक परम्परा में इनके सम्बन्ध में एक दोहा प्रचलित है -

"पांबू, हरबू, रामदे, मंगलिया मेहा।
पांचू पीर पधारज्यो, गोगा जी जेहा।"

इन वीरों को यहाँ लोक देवता के रुप में याद किया जाता है; क्योंकि इन्होंने लोक-कल्याण के लिए जीवन का त्याग किया था। इन लोक देवताओं से सम्बद्व राजस्थान में अनेक लोकगाथाएं प्रचलित हैं। इनके आख्यान सुनकर हमें अनेक प्रेरणाएं मिलती हैं, जैसे-

1. मर्यादित एवं शक्तिशाली जीवन की प्रेरणा।
2. परोपकार के लिए जीवन का उत्सर्ग करने की भावना।
3. धर्म और न्याय के लिए समान्त शाही शक्ति से टक्कर लेकर जन सामान्य को समानता एवं एकता प्रदान करना।
4. सात्विक प्रवृतियों का विकास करना।
5. जप और तप के माध्यम से सिद्वि प्राप्त करना।
6. नैराश्य का त्याग कर उत्साह का संचार करना।
7. छुआछूत की भावना समाप्त कर समाज में समरसता का भाव पैदा करना।

इन सभी लोक देवताओं से सम्बद्व अनेक-गाथाएं लोक गायकों के द्वारा गाई जाती हैं। राजस्थान का लोक साहित्य इन वीरों के त्याग और समर्पण से जुड़ा हुआ है। लोक गाथाओं के अतिरिक्त अनेक लोक नाटक भी ग्रामीण अंचल में प्रचलित है। बाबा रामदेव और पाबू जी ने छुआछूत को मिटाने के लिए अदम्य साहस का परिचय दिया था। मध्यकाल में सामाजिक पृष्ठभूमि में समरसता का भाव पैदा करने के लिए अपनी शक्ति के बल पर समाज सुधार किया था। राजस्थान में इन लोक देवताओं से सम्बद्व अनेक लोक-गीत भी प्रचलित हैं जो हमारी भावनाओं को पवित्रता प्रदान करते हैं। लोक-गीत काव्य की एक ऐसी विधा है जिसका सम्बन्ध व्यक्ति की रागात्मक प्रवृति से है। लोक-विश्वास एवं लोक-चेतना संचित है। हमारी भावनाओं का प्रकाशन सहजता के साथ लोक-गीतों के माध्यम से ही होता है। लोक-साहित्य में लोक-गीतों का विशेष महत्व है।

मानव समाज में कुछ जीवन मूल्य आदि काल से शाश्वत रहे हैं, जैसे कि नेकी, ईमानदारी, सच्चाई, सेवा, त्याग, करुणा, ममता, प्रेम और संवेदना आदि। साहित्य इन जीवन मूल्यों को विघटन से बचाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है। इधर जिस तेजी से इन शाश्वत जीवन मूल्यों का विघटन हुआ है, उसी गति से साहित्य ने इस

गिरावट को उपन्यासों, कहानियों, कविताओं तथा आलेखों व अन्य साहित्यिक विधाओं द्वारा बचाने का निरन्तर प्रयास किया है। नैतिक मूल्य भी हर युग में एक जैसे नहीं रहते ये निरन्तर परिवर्तनशील रहते है। परिवर्तन की प्रतिध्वनि सबसे पहले साहित्य में ही सुनाई देती है। आधुनिक काल के सभी प्रमुख साहित्यकारों ने हमारे स्थापित जीवन मूल्यों की रक्षा की है। प्रेमचन्द से लेकर मोहन राकेश, रमेश बक्षी, बाबा नागार्जुन, राजेन्द्र यादव, जैनेन्द्र कुमार, अज्ञेय, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग आदि ने अपने उपन्यासों के माध्यम से जीवन मूल्यों का निर्माण परिवर्तित परिस्थितियों के अनुसार किया है। इन साहित्यकारों ने समाज को विनाश से बचाने के लिए आगाह भी किया है।

निष्कर्ष

विविधता में एकता हमारी विशेषता है। हमारी चिन्ता है कि विविधता हमारी एकता को खंडित करने का कुप्रयास कर रही है। हम लोग भाषाओं को लेकर झगड़ रहे है। भारत जैसे महादेश में अनेक भाषाओं का होना स्वाभाविक हैं। प्रत्येक भाषा वीणा के सधे हुए तारों के समान है। सभी भारतीय भाषांए हमारी राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक समरसता के लिए आवश्यक है। इस विशाल देश की रूपात्मक विविधता हमारी सांस्कृतिक एकता की पूरक रही है। सारा भारत मेरा घर है, उनके सुख-दुःख का मैं भागीदार बना रहूँ, यह भावना शिक्षण संस्थाओं में भावी पीढ़ी के मन-मस्तिष्क में भरी जाएं इसके लिए ठोस कदम उठाए जाने ही आवश्यकता है। भारत 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के सिद्वान्त में विश्वास रखता है। इस संस्कृति में बहुजन हिताय ही नहीं सर्वजन हिताय की भावना है, जिसे बनाए रखना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है।

सन्दर्भ

1. संस्कृति के चार अध्याय- डा. रामधारी सिंह दिनकर, पृष्ठ.- 98
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पं. रामचन्द्र शुक्ल
3. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- डा. रामकुमार वर्मा
4. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- डा. रामकुमार वर्मा
5. राजस्थानी लोक गाथा कोश, डा. कृष्ण बिहारी सहल